

## मसीह के जीवन का परिचय

### एक यहूदी परिप्रेक्ष्य से

मेरी वफादार पत्नी बेथ को। मैं किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करना चाहता हूँ जो परमेश्वर और उसके वचन को प्यार करता हो, जो कि मेरे जीवन में और परमेश्वर के कार्य में मेरा भागीदार हो। परमेश्वर ने मेरे जीवन में दोनों ही चाहतों को सबसे अच्छी तरह से पूरा किया। हम साथ में, एक टीम हैं; मैं आपको और अधिक प्यार नहीं कर सकता।

### नई अंतर्राष्ट्रीय संस्करण का उपयोग

क्योंकि मैं एक यहूदी परिप्रेक्ष्य से मसीह के जीवन पर यह टिप्पणी लिख रहा हूँ, मैं नई अंतर्राष्ट्रीय संस्करण का उपयोग कर रहा हूँ जब तक अन्यथा संकेत नहीं दिया गया हो। ऐसा भी समय होगा जब मैं डेविड स्टर्न द्वारा पूर्ण यहूदी बाइबल (सीजेबी) का उपयोग करते हुए अंग्रेजी नामों के लिए हिब्रू का स्थान लूँगा। लेकिन आम तौर पर मैं यहूदी परिप्रेक्ष्य के लिए एनआईवी अनुवाद का उपयोग कर रहा हूँ।

### अदोनाय (ADONAI) का उपयोग

यहोशु के समय के बहुत पहले, शब्द **अदोनाय (ADONAI)** सम्मान से बाहर था, जो बोलने और परमेश्वर के व्यक्तिगत नाम के बदले में जोर से पढ़ने के लिए प्रयोग किया गया था, यह चार हिब्रू अक्षरों *Yud-heh-vav-heh*, विभिन्न *YHVH* के रूप में अंग्रेजी में लिखा है। तल्मूड (पसाचिम 50 ए) ने इस शब्द के उच्चारण करने की आवश्यकता नहीं समझी, जो परमेश्वर के चार-अक्षर के नाम का अर्थ है, और यह अधिकांश आधुनिक यहूदी सेटिंग (settings) में नियम बना हुआ है। इस परंपरा के सम्मान में, जो अनावश्यक लेकिन हानिरहित है, मैं **अदोनाय** का उपयोग कर रहा हूँ जहां *YHVH* का उपयोग किया गया है।<sup>1</sup> प्राचीन समय में जब लेखकों ने हिब्रू शास्त्रों का अनुवाद किया था, तो उन्होंने *YHVH* का नाम इतना सम्मानित किया था कि वे नाम का कोएले का एक स्ट्रोक बनाते और फिर इसे इस्तेमाल के पश्चात, उसे घिस कर और नष्ट कर फेंकते थे। बाद में तब वे एक और कोयले की मोहर बनाते थे और

काम के पूरा होने पर उसको नष्ट कर फेंक देते थे। उसका नाम उनके लिए इतना पवित्र हो गया कि उन्होंने लिखने या उनके नाम की प्रशंसा के बजाय नाम को वाक्यांश का स्थान देना शुरू कर दिया। ऐसा करने के कई सदियों से, उनके नाम के वास्तविक अक्षर और उच्चारण खो गए थे। जो सबसे नजदीकी हम पुकार सकें वह यहोवा शब्द है, इसके अलावा उच्चारण के लिये कोई और शब्द नहीं है। उच्चारण पूर्ण रूप से खो चुका है। इसलिये, यहोवा शब्द ही केवल बचा है जो वास्तविक उच्चारण के लगभग निकट है। **अदोनाय** और **हा'शाम** दोनों ही वास्तविक की जगह **पिता के स्नेह** की तरह से हैं, **हा'शाम** एक अधिक **श्रीमान** की तरह से शिष्टाचार के अनुकूल है।

### तनख का प्रयोग

हिब्रू शब्द **तनख** अक्षर T के आधार पर ("तोरा" के लिए), एक संक्षिप्त शब्द है। N ("Neviim," नाविईम या भविष्यद्वक्ताओं के लिए), और K ("केतुविम" के लिए), या पवित्र लेखों के लिये। यह दस्तावेज के रूप में मनुष्य के लिए परमेश्वर की शिक्षाओं का संग्रह है। शब्द "पुराने नियम" का अर्थ है कि यह अब मान्य नहीं है, या बहुत कम पुराना है या कुछ पुराने, या तो उपेक्षित या छोड़े गए। लेकिन यीशु ने स्वयं कहा: **"यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूँ, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूँ"** (मत्ती 5:17 CJB)। मैं इस भक्तिपूर्ण टिप्पणी (devotional commentary) के दौरान **पुराना नियम** वाक्यांश के बजाय संक्षिप्त हिब्रू शब्द **तनख** का उपयोग कर रहा हूँ।

**पुराने नियम के संत**, वाक्यांश का उपयोग करने के बजाए , **"तनख के धर्मी,"** का उपयोग करें।

**मसीही सभाओं**, और सामान्य तौर पर **यहूदी मैसिनीक समुदाय**, **पुराने नियम के संतों** को कभी भी वाक्यांश के रूप में उपयोग नहीं करते हैं। यहूदी परिप्रेक्ष्य से, वे **"तनख के धर्मी"**, वाक्यांश का उपयोग करना अधिक पसंद करते हैं। इसलिए, मैं इस भक्ति टिप्पणी के दौरान **पुराने नियम के संतों** के बजाय **"तनख के धर्मी"** वाक्यांश का उपयोग कर रहा हूँ।

## शिष्य और प्रेरित शब्दों का प्रयोग

लूका इंगित करता है कि यीशु ने अपने शिष्यों में से बारह चुना और उन्होंने प्रेरित का नाम दिया। इसके फलस्वरूप, मैं उन शिष्यों के लिए एक सामान्य शब्द के रूप में शिष्य शब्द का प्रयोग कर रहा हूँ, जो अपने गुरु से सीखने के लिए प्रतिबद्ध थे। और मैं उन बारहों के लिए प्रेरित शब्द का उपयोग कर रहा हूँ जिनके साथ येशुआ ने अपना समय व्यतीत किया और अपने प्रतिनिधि अधिकार के साथ बाहर भेजा। जाहिर है, यीशु ने अपने शिष्यों में से बारह विशेष चेलों को चुना। मैं भी उन बारह प्रेरितों का उल्लेख करने के लिए लिये हिब्रू शब्द तल्मद (एकवचन) या तल्मिद (बहुवचन) का प्रयोग कर रहा हूँ, जिसका अर्थ है छात्र या शिक्षार्थी। मसीह के स्वर्ग में पिता के पास वापस जाने के बाद, पवित्र आत्मा द्वारा सशक्त होने के पश्चात, उन्होंने अपनी सेवा को पूरा किया।

## यीशु की शिक्षा का ऐतिहासिक संदर्भ

यह येशुआ के शिक्षण को समझने के लिए महत्वपूर्ण है कि आप अपने आप को पहली सदी के यहूदी धर्म में विसर्जित कर दें जिस का वह एक हिस्सा था। दो अवधारणाएं हैं जो मसीह के जीवन को समझने के दिल में बैठानी होंगी। पहली अवधारणा परमेश्वर का राज्य है, और यीशु के पूरे शिक्षण और सेवा के लिए बहुत जरूरी है। यह उस सवाल का जवाब देता है, "वह इस पृथ्वी पर क्यों आया था?" दूसरी अवधारणा मौखिक व्यवस्था है। मैं यह कहने की हिम्मत करता हूँ कि आप यीशु और उसके दिनों के धार्मिक नेताओं के बीच बातचीत को नहीं समझ सकते हैं, जब तक कि आप मौखिक व्यवस्था को नहीं समझते हैं (देखें E1 मौखिक व्यवस्था)। यह उस सवाल का जवाब देती है, "वह क्यों अस्वीकार कर दिया गया?"

## सुसमाचारों का व्यक्तिगत परिचय

सुसमाचारों को व्यक्तिगत और सामान्य तुलना के दृष्टिकोण से देखना लाभदायक है। प्रत्येक सुसमाचार स्वतंत्र कार्य के रूप में पढ़ा जाने के लिये लिखा गया था। प्रत्येक मसीह के जीवन के लिए एक अलग और विशिष्ट गवाह है। जब जरूरत होती है, मैं रूच हैकोडश की प्रेरणा के तहत प्रत्येक व्यक्ति के लेखक के अलग-अलग विषयों और दृश्यों को इंगित कर रहा हूँ। जितना अधिक आप अच्छी तरह से प्रत्येक व्यक्ति के

सुसमाचार समझते हैं, **मसीहा** के जीवन का अध्ययन उतना ही अधिक लाभदायक होगा।

## **मती रचित सुसमाचार**

1. **मती का लेखक:** मती यीशु की यहूदी तस्लीमदीम थी जो एक बार एक काराधिकारकर्ता के रूप में एक जीवित कमाई करता था, जो रोमन सरकार के एक अधिकारी के रूप में कार्यरत था। पवित्र आत्मा द्वारा प्रेरित, उसने एक हिब्रू परिप्रेक्ष्य से येशुआ की एक जीवनी लिखी, जिसमें लंबे समय से प्रतीक्षा में मसीह का यहूदी के वैध राजा के रूप में यीशु के राजशाही अधिकारों पर बल दिया। शुरुआती विश्वासियों ने सामान्य रूप से मती को सुसमाचार का श्रेय दिया, और इसके विपरीत कोई परंपरा नहीं थी। इस पुस्तक को शुरू से ही जाना जाता था और जल्दी ही इसे स्वीकार भी कर लिया गया था। यह उनके चर्च संबंधी इतिहास (ईडी 323), इसुबियस ने पिपियास (ई। 140) के एक बयान का हवाला दिया कि मैटितियुआ ने अरामी में यीशु की बातें लिखीं; मगर, मती की कोई अरामी इंजील कभी भी नहीं मिली है। कुछ लोगों का यह भी मानना है कि मती ने एक विशाल श्रोताओं के लिए ग्रीक भाषा में अपना सुसमाचार लिखने से पहले अरामिक भाषा में यीशु के शब्दों का एक संक्षिप्त संस्करण लिखा था।
2. **मती की तिथि:** शुरुआती विश्वासियों के लेखन के अनुसार, मैटिथुहू ने सबसे व्यापक रूप से और अक्सर किसी भी सुसमाचार का इस्तेमाल किया है। यही कारण है कि यह सबसे पहली व्यवस्था है। लेकिन सभी सुसमाचारों की तरह, मती आज तक आसान नहीं है और इसके लिखे जाने के सुझावों में एडी 40 से 140 तक का अंतर है। इस दिन के दो अभिव्यक्ति (मती 27: 8) और आज तक (मती 28:15) से संकेत मिलता है कि पुस्तक में वर्णित घटनाओं के बाद समय का एक महत्वपूर्ण काल बीत चुका है, लेकिन वे ये भी इशारा करते हैं कि 70 ईसा पूर्व में यरूशलेम के विनाश होने से पहले की यह एक घटना थी। क्योंकि मती में सुसमाचार बहुतायत से मिलता है इसलिये संभवतः लगता है कि मैतियातु एक स्रोत के रूप में मरकुस के सुसमाचार पर निर्भर था। इसलिए, मरकुस की तिथि मती के लिए जल्द ही की तिथि निर्धारित करती

है। इस पुस्तक की लिखी जाने वाली तारीख की संभावना 65 ई० के आसपास की है। यह सुसमाचार फिलिस्तीन या सीरिया के अन्ताकिया में लिखा गया हो सकता है।

3. **मती के पाठक** : मती का सुसमाचार एक यहूदी के द्वारा लिखा गया और यहूदियों के लिये लिखा गया सुसमाचार है। इस लिए, यह लंबे समय से "यहूदी सुसमाचार" के रूप में पहचाना गया है। क्योंकि चर्च पहले यहूदी विश्वासियों (प्रेरितों के कार्य 2: 1-47) से शुरू हुआ था, और मती का सुसमाचार बहुत लोकप्रिय हो गया और संभवतः इसका कारण यह है कि यह सुसमाचार, सुसमाचारों के बीच पहले सूचीबद्ध किया गया है। मत्तितियाहू लेखक है, और उनके देशवासी पाठकों रहे हैं, और येशुआहा- मेशिअच इसका विषय है। मती ने लिखा, "वह राजा मसीहा है - उसकी आराधना करो।"
4. **मती का मसीह** : मती ने यीशु को इस्राएल के वादा किये हुए राजा मसीहा के (1:23, 2:2 और 6, 3:17, 4:15-17, 21: 5 और 9, 22:44-45, 26:64, 27:11; 27:27) रूप में प्रस्तुत किया। वाक्यांश, "स्वर्ग का राज्य" मती रचित सुसमाचार में बत्तीस बार प्रकट हुआ है जबकि नए नियम में और कहीं ऐसा नहीं है। यह दिखाने के लिए कि येशुआ मसीहा की सारी योग्यताओं को पूरी करता है, मती किसी अन्य किताब की तुलना में तनख से अधिक उदाहरण और चित्रण (लगभग 130) का उपयोग करता है। अक्सर इस सुसमाचार में वाक्यांश का खुलासा प्रयोग किया गया है: इसलिए, जो भविष्यद्वक्ता के माध्यम से कहा गया था, जो मती में नौ बार प्रकट हुआ है और एक बार भी किसी दूसरी इंजील में नहीं आया है। यीशु नबियों का चरमोत्कर्ष हैं (12: 39-40, 13:13-15 और 35, 17:5-13)। और मैसिअनिक शब्द दाऊद का बेटा (अर्थ वंश) मती के सुसमाचार में नौ बार आया है, लेकिन अन्य सभी सुसमाचारों में केवल छह बार आया है।
5. **मती का उद्देश्य** : मती का उद्देश्य यीशु को "यहूदियों के राजा" के रूप में पेश करना है, जिस की प्रतीक्षा यहूदी लम्बे समय से कर रहे थे। तनख के उद्धरणों को सावधानीपूर्वक चुनने की श्रृंखला के माध्यम से, मती ने यीशु के मसीहा होने का दावा किया है। उनकी वंशावली, बपतिस्मा, संदेश, और चमत्कार सभी महत्वपूर्ण घटनाओं का

वर्णन अनिवार्य रूप से वर्णित किए गये हैं : यीशु राजा मसीहा है। यहां तक कि उनकी मृत्यु, हार की उम्मीद में पुनरुत्थान द्वारा जीत में बदल जाती है, और उसका संदेश एक ही है, कि राजा मसीहा जीवित है।

6. **मती का केंद्रीय प्रसंग** : येशुआ, यहूदियों का मसीहा, जो उद्धार के इतिहास का चरमोत्कर्ष है, आ गया है।

7. **मती रचित सुसमाचार के प्रमुख पद्य** : *शमौन पतरस ने*

*उत्तर दिया, "तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, "हे शमौन, योना के पुत्र, तू धन्य है; क्योंकि मांस और लहू ने नहीं, परन्तु मेरे पिता ने जो स्वर्ग में है, यह बात तुझ पर प्रगट की है। और मैं भी तुझ से कहता हूँ कि तू पतरस है, असुर मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्ग के राज्य की कुंजियाँ दूंगा : और जो कुछ तू पृथ्वी पर बांधेगा, वः स्वर्ग में बंधेगा; और जो कुछ तू पृथ्वी पर खोलेगा, वः स्वर्ग में खुलेगा" (मती 16:16-19)।*

### मरकुस के अनुसार सुसमाचार

1. **मरकुस का लेखक** : मरकुस के मुताबिक सुसमाचार, दूसरों की तरह, दूसरा सुसमाचार, लेखक का कोई ब्योरा नहीं है। लेकिन शुरुआती विश्वासियों की परंपरा उसे यूहन्ना मरकुस बताती है, यूहन्ना उसका यहूदी नाम था और मरकुस उसका लैटिन नाम था (प्रेरितों के कार्य 12:12)। पपिआस, इरेनिउस, अलेक्जेंड्रिया का क्लेमेंट, कलीसिया के स्रोत के पिता हैं, जिन्होंने पुष्टि की थी कि लेखक मरकुस ही था। वह बारह में से एक नहीं था, लेकिन मरियम नामक अनुयायी का पुत्र था (प्रेरितों के कार्य 12:12), जिनके पास एक बड़ा घर था जिसका उपयोग यरूशलेम में विश्वासियों के लिए एक बैठक स्थल के रूप में किया गया था। पतरस जाहिराना तौर पर इस घर में गया था क्योंकि उस दास लड़की ने गेट पर उसकी आवाज़ पहचानी थी (प्रेरितों के कार्य 12: 13-16)। बरनबास मरकुस के चचेरे भाई थे (कुलुस्सियों 4:10), परन्तु पतरस वह व्यक्ति हो सकता है जिसने उसे मसीह तक पहुंचाया (पतरस ने उसे मेरा बेटा

मरकुस कहकर बुलाया, 1 पतरस 5:13)। उसका केफ़ा के साथ घनिष्ठ संबंध था जिसने मरकुस के सुसमाचार के लिए परेरितीय अधिकार दिया था, क्योंकि पतरस स्पष्ट रूप से मरकुस का सूचना का प्राथमिक स्रोत था। ऐसा बताया गया है कि मरकुस एक युवक के अपने खाते में खुद का जिक्र कर रहा था, जिसने एक मलमल के कपड़े पहने हुए थे, जो गथसमनी में यीशु का अनुसरण कर रहा था (मरकुस 14:51)। चूंकि सभी प्रेरितों ने यीशु को छोड़ दिया था (मार्क 14:50), यह छोटी घटना शायद एक पहले से ही उसके बारे में हो सकती है।

2. **मरकुस की तिथि** : अधिकांश विद्वानों का मानना है कि चार इंजीलों में से मरकुस की इंजील पहले लिखी गई थी, लेकिन इसकी तारीख पर अनिश्चितता है। क्योंकि मंदिर के विनाश के बारे में भविष्यवाणी की वजह से (मार्क 13: 2), यह दिनांक 70 से पहले का होना चाहिए था, लेकिन प्रारंभिक परंपराएं इस बात से असहमत हैं कि क्या यह 64 ईसा पूर्व में पतरस के शहीद के पहले या बाद में लिखा गया था। चूंकि 99% मरकुस का सुसमाचार अन्य सुसमाचारों में मिलता है, ऐसा लगता है कि यह सुसमाचार पहले से लिखा गया था। इस पुस्तक की संभावित तारीख 50 के दशक के अंत में है। प्रारंभिक परंपरा इंगित करती है कि यह रोम में लिखा गया था।

3. **मार्क के पाठक** : मार्क विशेष रूप से सामान्य और रोमन पाठकों में गैर यहूदीय पाठकों के लिए लिखा था। इस के कुछ संकेत हैं कि यीशु की वंशावली इस सुसमाचार में शामिल नहीं है (अन्यजातियों के लिए थोड़ा सा); इसमें अरमाइक वाक्यांश कम से कम पांच बार अनुवादित किये गये हैं (3:17; 5:41; 7:34; 14:36; 15:34); शब्दों और मात्राओं के लिए लैटिन का इस्तमाल बराबर किया है (मरकुस 12:42 यूनानी दो लेफ्टा के तांबे के सिक्कों के लिए इस्तेमाल किया गया है); कनानी स्त्री की कहानी में इसाएल के घर के यीशु की खोई हुई भेड़ के बारे में कोई बात नहीं की गई है (मरकुस 7: 24-30); और अंत में, प्रेरितों ने सामरिया या अन्यजातियों के बीच मिशन पर जाने से मना नहीं किया। मरकुस ने लिखा, "यह सेवक है जो मानवता की सेवा करता है - उसका अनुसरण करें।"

4. **मरकुस के मसीह** : चार सुसमाचारों में सबसे छोटा और सरलतम, मरकुस मसीह के जीवन में एक कुरकुरा और तेजी से चलने वाला दृष्टिकोण देता है। कुछ टिप्पणियों के साथ, मरकुस की कहानी उसके खुद के लिए बोलती है क्योंकि प्रभु को एक सक्रिय, दयालु, और आज्ञाकारी दास की तरह से, जो लगातार दूसरों की शारीरिक और आध्यात्मिक जरूरतों के लिए एक सेवक मिला। क्योंकि यह एक सेवक की कहानी है, मरकुस ने यीशु के वंश और जन्म को छोड़ कर और अपने व्यस्त सार्वजनिक सेवा में कदम उठाए। मरकुस ने मुख्य रूप से अपनी शिक्षाओं की उपेक्षा के बिना येशुआ के कार्यों से संबंधित लिखा है। इस पुस्तक का विशिष्ट शब्द **आत्मा (euthus)** है, तुरंत या सीधे अनुवाद, **तत्काल** या **तुरंत** अनुवाद किया, और यह नए नियम के बाकी हिस्सों की तुलना में इस सघन सुसमाचार (ब्यालीस बार) में अधिक बार प्रकट होता है। मसीह लगातार एक **विशेष लक्ष्य** की ओर बढ़ रहा है जो लगभग सभी के लिए छिपा हुआ है। मरकुस स्पष्ट रूप से इस **अद्वितीय सेवक** की शक्ति और अधिकार को दर्शाता है, उसे **परमेश्वर के बेटे** (मरकुस 1:1 और 11; 3:11; 5:7; 9:7; 13:32; 14:61 से कम नहीं बताता है)।

5. **मरकुस का उद्देश्य** : रोमनों की क्रिया दिशानिर्देश के साथ, मरकुस ने एक सुसमाचार लिखा था जो मसीहा के कार्यों पर जोर देता है। मरकुस का सुसमाचार मसीह की सेवक प्रकृति पर जोर देता है; इसलिए, हम कह सकते हैं कि मसीह के दास के रूप को दिखाने के लिए (मरकुस 10:45) इस सुसमाचार का उद्देश्य है।

6. **मरकुस का केंद्रीय विषय** : येशुआ, परमेश्वर का पुत्र, तलाश, सेवा और बचाने के लिए आया था। वह आज्ञाकारी परमेश्वर के सेवक के रूप में पापों के लिए फिरौती की कीमत का भुगतान करने के लिए, और अपने शिष्यों के पालन-पोषण के लिए पीड़ा और बलिदान के एक आदर्श के रूप में भुगताना पड़ा।

7. **मरकुस का प्रमुख पद्य** : यीशु ने अपने प्रेरितों को एक साथ बुलाया और कहा : “तुम जानते हो कि जो एनी जातियों के हाकिम समझे जाते हैं, वे उन पर प्रभुता करते हैं; और उनमें जो बड़े हैं, उन पर अधिकार जताते हैं। पर तुम में ऐसा नहीं है, वरन जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे वह तुम्हारा सेवक बने; और जो कोई तुम में प्रधान होना चाहे, वह सब का दास बने। क्योंकि मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, पर इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे” (मरकुस 10:42-45)।

### लूका के अनुसार सुसमाचार

1. **लूका के सुसमाचार का लेखक** : लूका एक डॉक्टर था (कुलुस्सियों 4:14), संभवतः मकाडोनिया में जन्म और पला-बढ़ा था। वह एक यहूदी नहीं था, बल्कि एक रूपांतरित व्यक्ति था (यह उसे नए नियम के लिए एकमात्र समानतावादी योगदान देगा)। उसने अपने सुसमाचार में जो कुछ लिखा है, उसका प्रत्यक्षदर्शी होने का दावा नहीं किया है, बल्कि उन्हें लिखने से पहले घटनाओं की पूरी जांच करने का प्रयत्न किया है। यह आमतौर पर आज बाइबिल विद्वानों के बीच मान्यता प्राप्त है, जब लूका ने यह सुसमाचार लिखा, उसके मन में पहले से ही प्रेरितों के कार्य का लेखन था। दो रूप एक दो भागों का काम था। यह लूका रचित सुसमाचार और प्रेरितों के कार्य दोनों की शुरुआत से स्पष्ट है कि उन्हें थियुफिलुस नामक एक ही व्यक्ति को संबोधित किया गया था, जिसका मतलब है कि परमेश्वर का प्रेमी, जो दो खंडों के काम के रूप में है। लूका की किताब सभी सुसमाचारों में सबसे लंबी है मती के अध्याय ज्यादा हैं, लेकिन लूका में अधिक पद्य और शब्द हैं। और लूका और प्रेरितों के संयुक्त कार्य में नए नियम में किसी एकल मानव लेखक की तुलना में अधिक मात्रा में सामग्री शामिल है, जिसमें रब्बी शाऊल भी शामिल है। प्रेरितों का कार्य लूका के सारांश से शुरू होता है और वह कहानी जारी करता है जहां से लूका रचित सुसमाचार की समाप्त होता है। दोनों पुस्तकों की शैली और भाषा काफी समान हैं। पूरे युग में चर्च ने इस पुस्तक के लिये लूका को जिम्मेदार ठहराया है।

2. **लूका की तिथि** : सुसमाचार की तिथि प्रेरितों के कार्य की निकटता से जुड़ी हुई है। क्योंकि पौलुस प्रेरितों के कार्य के अंत में रोम में जेल में था (लगभग 62 ए. डी.

में), लूका ने पौलुस की रिहाई और बाद में शहीद होने से पहले का कार्य पूरा कर लिया था। यह ऐ. डी 62 के आसपास के प्रेरितों के कार्य को स्थान देगा, और लूका का सुसमाचार शायद शुरुआती 60 के दशक में लिखा गया था।

**3. लूका के पाठक :** अपने दो खंड लूका और प्रेरितों के कार्य के सेट में, लूका, पवित्र आत्मा की प्रेरणा के तहत, दुनिया तक पहुंचने की इच्छाएं रखता है। उन्होंने न तो आध्यात्मिक रूप से विशेषाधिकार प्राप्त यहूदी और न ही राजनीतिक रूप से विशेषाधिकारित रोमनके लिये लिखा, लेकिन आम यूनानियों के लिए, जिनमें से अधिकांश में कोई शक्ति नहीं थी, कोई धन नहीं था और कोई आशा नहीं थी, के लिये अपने सुसमाचार को लिखा। उनका सुसमाचार यहूदी धर्म में आधारित है, और यद्यपि उनका संदेश यहूदी धर्म के दिल में शुरू होता है, तजियान और मंदिर में, उनके पाठकों में पूरी दुनिया है। लूका ने सांस्कृतिक सीमाओं, जातीय सीमाओं और नस्लीय सीमाओं को तोड़ दिया क्योंकि इसमें मानवता शामिल है। उन्होंने लिखा, "पापों के बिना पुरुषों में यह केवल इंसान है - उसका अनुकरण करो।"

**4. लूका का मसीह :** यीशु की मानवता और करुणा को बार-बार लूका के सुसमाचार में जोर दिया गया है। लूका अपने सुसमाचार में मसीह के वंश, जन्म और विकास का सबसे पूरा विवरण देता है। वह मनुष्य का आदर्श पुत्र है जो हमारे दुखों को उठाने के लिए और हमें उद्धार का अनमोल उपहार प्रदान करने के लिए पापपूर्ण मानव जाति के दुःख और दुखों की पहचान कराता है। यीशु अकेले मानव पूर्णता के ग्रीक आदर्श को पूरा करता है, और फिर भी, दुनिया के सभी लोगों का उद्धारकर्ता है।

**5. लूका का उद्देश्य :** लूका, यीशु मसीह के अद्वितीय जीवन का एक सटीक, कालानुक्रमिक और व्यापक लेख बनाना चाहता था (लूका 1: 3-4) अन्य-जातियों के विश्वासियों के विश्वास को मजबूत करने और अविश्वासियों के बीच विश्वास को बचाने के लिए प्रोत्साहित करना। लूका का एक और उद्देश्य भी था, और यह दिखाने के लिए था कि मसीह केवल दिव्य ही नहीं था, बल्कि मानव भी था। लूका मसीह की भावनाओं और मानवता को किसी भी अन्य सुसमाचार की तुलना में अपने प्रेरितों के कार्य लेखन में मानवता को अधिक समर्पित करके सभी में मसीह को चित्रित करता है।

6. **लूका का केंद्रीय विषय** : लूका ने यीशु को एकदम सही मनुष्य के रूप में प्रस्तुत किया जो यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को तलाश करने और बचाने के लिए आया था। वह सांस्कृतिक सीमाओं, जातीय सीमाओं और नस्लीय सीमाओं को नष्ट करता है क्योंकि वह मानवीय स्थिति में कटौती करता है।

7. **लूका का प्रमुख पद्य** : “क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुआ को ढूँढने और उनका उद्धार करने आया है” (लूका 19:10)।

### यूहन्ना के अनुसार सुसमाचार

1. **यूहन्ना का लेखक** : प्रेरित योचानन के लेखक, जिस से मसीह प्रेम रखते हैं, वह तमादीम है (यूहन्ना 13:23; 19: 26; 20:2; 21:7, 20 और 24)। वह प्रारंभिक चर्च में प्रमुख थे लेकिन उसका नाम इस सुसमाचार में नहीं है-- जो स्वाभाविक होगा अगर उसने इसे लिखा था, अन्यथा इसे समझाना मुश्किल होगा। लेखक यहूदी जीवन को अच्छी तरह से जानते थे, जैसा कि लोकप्रिय मस्तिष्क संबंधी अटकलों के संदर्भ से देखा गया है (उदाहरण के लिए: यूहन्ना 1: 20-21; 7: 40-42), यहूदियों और सामरी के बीच दुश्मनी के लिए (योचानन 4: 9), और यहूदियों के रिवाजों के लिए, जैसे सब्त के दिन काम करने के निषेध पर आठवें दिन खतने का रिवाज था (यूहन्ना 7:22)। वह फिलिस्तीन के भूगोल और विशेष रूप से यरूशलेम शहर को भली-भांति जानते थे, जैसे काना जैसे एक आकस्मिक विवरण का उल्लेख, एक गांव जिसका हमें किसी भी पहले के लिखित सुसमाचार में नहीं मिलता है (2:1; 21:2)। यूहन्ना रचित सुसमाचार कई चीजों को छूता है जो स्पष्ट रूप से आँखों देखी साक्षी पर आधारित थी --- जैसे कि बैतनिय्याह के घर में टूटे इत्र जार की खुशबू से भरा (यूहन्ना 12: 3)। प्रारंभिक चर्च परंपरा यह पुष्टि करती है कि यह प्रेरित यूहन्ना द्वारा लिखा गया था। इरेनायूस (130-200 ई।) ने लिखा है, "यूहन्ना, प्रभु का शिष्य, जो प्रभु की छाती पर अपना सर रखे रहता था, एशिया के इफिसुस में रहते हुए भी सुसमाचार प्रकाशित किया"। इरेनायूस ने कहा कि वह पोलीकार्प, यूहन्ना के एक शिष्य से खुद यह जानकारी प्राप्त की। इसलिए दोनों आंतरिक और बाहरी साक्ष्य मनुष्य को मानव लेखक के रूप में प्रेरित करते हैं।

2. **यूहन्ना की तिथि** : अठारहवीं शताब्दी के बाद से, यह महत्वपूर्ण विद्वानों के बीच में सामान्य था जो यूहन्ना की तारीख को दूसरी शताब्दी में देर से लिखा गया था, यह मानते हुए कि यीशु के बारे में उसका उच्च विचार चर्च में देर से विकसित हुआ था। तथापि, **यूहन्ना रैयेंड्स पांडुलिपि** की खोज (पी 52, 135 ई.), यूहन्ना के एक छोटे कागज़ का टुकड़ा, साथ ही कुमरन की अन्य खोजों (जो सुसमाचार की यहूदियत दिखाती हैं) ने विद्वानों को देर से तारीख को बताने के लिए मजबूर किया है। चूंकि **यूहन्ना** के तीन पत्र और **प्रकाशितवाक्य** उनके सुसमाचार के बाद लिखे गये थे, आज के अधिकांश विद्वानों ने 80 से 90 के बीच की सुसमाचार के लेखन की तारीख को माना है।

3. **यूहन्ना के पाठक** : यूहन्ना को निश्चित रूप से नए समयावधि (synoptic)सुसमाचार और संभवतः तय करने से पहले कई सालों से उनसे पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन में, सिखाया जाता था, कि यीशु की जीवनी अधूरी रही। सभी विश्वासियों ने उन्हें यहूदियों के राजा के रूप में जाना था, यीशु के सेवक रूप में और यीशुआ मनुष्य के पुत्र के रूप में, लेकिन विषय की आवश्यकता बनी रही, मसीह यीशु परमेश्वर के पुत्र के रूप में यूहन्ना ने अपने सुसमाचार में लिखा है ताकि हम जान सकें कि मनुष्य का पुत्र मानव शरीर में था --- पूरी तरह से मानव, लेकिन परमेश्वर से कोई कम नहीं जैसा की आदि में था, उसने ब्रह्मांड को अस्तित्व को बोल कर रचा। यूहन्ना ने लिखा, "यह मानव शरीर में परमेश्वर है - उस पर विश्वास करो"।

4. **यूहन्ना का मसीह** : यह पुस्तक परमेश्वर के पुत्र को ईश्वरत्व और उसके अवतरण के लिए पूरी बाइबल में सबसे शक्तिशाली दावे प्रस्तुत करती है। वह मनुष्य जिसे यीशु कहते हैं (यूहन्ना 9:11) वह मसीह भी है, जो जीवित परमेश्वर का पुत्रा है (यूहन्ना 6:69)। मसीह के ईश्वरत्व को उनके सात बयानों **"मैं हूँ"** में देखा जा सकता है: **जीवन की रोटी मैं हूँ** (यूहन्ना 6:35), **जगत की ज्योति मैं हूँ** (यूहन्ना 8:12, 9:5), **द्वार मैं हूँ** (यूहन्ना 10:7 और 9), **अच्छा चरवाहा मैं हूँ** (यूहन्ना 10:11 और 14), **पुनरुत्थान और जीवन मैं हूँ** (यूहन्ना 11:25), **मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं हूँ** (यूहन्ना 14:6), **सच्ची दाखलता मैं हूँ** (यूहन्ना 15:1-5)।

सात चिन्ह या चमत्कार : पानी को दाखरस में बदलना (यूहन्ना 2:1-12); अधिकारी के बेटे को चंगा करना (यूहन्ना 4:43-53); पांच हजार लोगों को खिलाना (यूहन्ना 6:1-24), पानी पर चलना (यूहन्ना 6:16-24); जन्म के अंधे को द्रष्टि प्रदान करना (यूहन्ना 9:1-44); लाज़र को मुर्दों में से ज़िन्दा कर (यूहन्ना 11:1-44); अपने दिव्य चरित्र को इंगित करना। वचन परमेश्वर था (यूहन्ना 1: 1), वचन देहधारी हुआ (यूहन्ना 1:14)।

5. **यूहन्ना का उद्देश्य** : यूहन्ना के सुसमाचार में उद्देश्य का एक स्पष्ट बयान है। यीशु ने अपने प्रेरितों की उपस्थिति में कई अन्य चमत्कार किए, जो कि इस पुस्तक में दर्ज नहीं किए गए हैं। “यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; *परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ*” (यूहन्ना 20:30-31)। यह संकेत देता है कि सुसमाचार का प्राथमिक उद्देश्य सुसमाचार प्रचारक है, जो अविश्वासियों को मसीह में विश्वास करने के लिए लाता है। दूसरी तरफ, वाक्यांश की व्याख्या: आप विश्वास कर सकते हैं, विवादित है। कुछ शुरुआती पांडुलिपियां इसे वर्तमान उद्देश्य के रूप में देखती हैं, और इसका अनुवाद किया जा सकता है : कि आप विश्वास करना जारी रख सकते हैं। इसलिए, इसका उद्देश्य विश्वासियों को उनके विश्वास में और आगे बढ़ा सकता है। सुसमाचार और आश्वासन के इन दो उद्देश्यों परस्पर विशेष नहीं हैं। दोनों लिखने के लिए यूहन्ना के उद्देश्य के पहलू हो सकते हैं। रोशनी और अंधेरे का विषय यूहन्ना के सुसमाचार में एक मामूली मूल भाव है।

6. **जॉन की अनोखी सामग्री और धर्मवैज्ञानिक विषय** : जो केन्द्रीय विषय व्यक्त करना चाहते थे, वह यह है कि यीशु ईश्वर का ईश पुत्र है जो पिता को प्रकट करता है, जो कोई भी उस पर विश्वास करता है, उसे अनन्त जीवन प्रदान करता है।

अ. यूहन्ना का सुसमाचार सुसमाचारों के बीच अद्वितीय है। हालांकि यह एक और साधारण शब्दावली के साथ, साधारण शैली में लिखा गया है, यह सुसमाचार यीशु के शब्दों और कर्मों के पीछे धर्मवैज्ञानिक अर्थों और प्रभाव के गहरे स्तर को दर्शाता है।

ब. यूहन्ना ने संक्षेप में सारे सुसमाचारों (मती, मरकुस और लूका) में शामिल बहुत सी सामग्री को छोड़ दिया है। यूहन्ना अपने सुसमाचार में कोई वंशावली प्रदान नहीं करता है, इस तथ्य को दर्शाता है कि ईश्वर की कोई शुरुआत नहीं होती है। योहन्नन शायद परमेश्वर के रूप में उसकी प्रकृति पर जोर देने के लिए मसीह के बचपन का कोई विवरण प्रदान नहीं करता है, और न ही कोई दृष्टान्त देता है। यूहन्ना ने जंगल में यीशु मसीह के प्रलोभन को छोड़ दिया, पहाड़ पर उनका रूपान्तरण, उनके पुनरुत्थान के बाद प्रेरितों की स्थापना, और पृथ्वी से उनके उठाये जाने तक के प्रलोभन को भी छोड़ दिया। यूहन्ना में यीशु के अधिकांश शिक्षण अद्वितीय हैं। यूहन्ना के बान्वें प्रतिशत उनका सुसमाचार अद्वितीय है, केवल 8 प्रतिशत संक्षेप में दुसरे सुसमाचारों (यह मार्क के लगभग बिल्कुल विपरीत) में पाया गया है। सात चमत्कारों में से पांच दूसरी इन्जीलों में नहीं हैं। सदूकियों का उल्लेख नहीं है और न ही पापियों और टैक्स कलेक्टरों के साथ यीशु की सहभागिता का वर्णन मिलता है। कई घटनाएं जो दुसरे सुसमाचारों में महत्वपूर्ण हैं जैसे जन्म कथाएँ, वंशावली, यीशु के बपतिस्मा, प्रलोभन, रूपान्तरण और उदगम सहित। उन्हें छोड़ दिया गया है। कुंजी, संक्षेप में सारे सुसमाचारों में वाक्यांश, परमेश्वर का राज्य, यूहन्ना में केवल दो बार जाहिर हुआ है यूहन्ना भी संक्षेप में सारे सुसमाचारों के साथ पुनरावृत्ति से बचा नहीं, जब तक कि उसका उद्देश्य पूरा नहीं हुआ।

स. यूहन्ना एकमात्र लेखक है जो यीशु के व्यापक यहूदियों में सेवा का वर्णन करता है। अकेले सरे सुसमाचारों के तुलनात्मक अध्ययन से केवल यह बताना असंभव है कि मसीहा की सार्वजनिक सेवा कितने समय तक चली। वे फसह का उल्लेख तब करते हैं, जब यीशु मारा गया। यूहन्ना इस सामग्री को हमें बताता है कि मसीह की सार्वजनिक सेवा के दौरान चार फसह पड़े थे; इस प्रकार, हम जानते हैं कि उसकी यह सेवा साढ़े तीन साल तक चली।

द. यूहन्ना बार-बार यीशु के उन लोगों के साथ संपर्क की बातें करता है, जो उसके आस-पास थे जैसे कि ओर निकोडेमस और सामरी स्त्री हैं। जब लोग यीशु के संपर्क में आते थे, तो उन्होंने या तो उनके व्यक्तित्व और उनके संदेश को स्वीकार या

अस्वीकार कर दिया था लेकिन किसी भी तरह से भी, प्रतिक्रिया आवश्यक थी। इन व्यक्तिगत साक्षात्कारों से, हमें येशुआ की पहचान में महान अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है।

य. अंततः, यूहन्ना के सुसमाचार में किसी भी अन्य की तुलना में रुच हाकोड़ेश के बारे में यीशु ने अधिक विस्तारित अध्यापन किया है।

**7.यूहन्ना के प्रमुख पद्य :** “क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना इकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वः नष्ट न हो, परन्तु अनंत जीवन पाए” (यूहन्ना 3:16)।